बिजनेस स्टडीज - 12

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. वैज्ञानिक प्रबन्ध की परिभाषा दीजिए।

उत्तर- टेलर के अनुसार, "वैज्ञानिक प्रबन्ध आपके यह जानने की कला है कि आप लोगों से यथार्थ में क्या कराना चाहते हैं तथा यह देखना चाहते हैं कि वे उसको सुन्दर तथा मितव्ययितापूर्ण ढंग से कैसे करें।"

प्रश्न 2. वैज्ञानिक प्रबन्ध के कोई दो सिद्धान्त बताइए।

उत्तर- वैज्ञानिक प्रबन्ध के दो सिद्धान्त निम्नलिखित हैं---

(i) विज्ञान पद्धति न कि अंगूठा टेक नियम। (ii) सहयोग, न कि व्यक्तिवाद।

प्रश्न 3. समय अध्ययन के मुख्य उद्देश्य बताएँ। [NCERT]

अथवा

समय अध्ययन के कोई दो उद्देश्य बताइए।

उत्तर- समय अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं---

(i) उपयुक्त प्रेरक योजनाओं को तैयार करना,

(ii) श्रम लागत को निर्धारित करना तथा

(ii) कर्मियों की संख्या का निर्धारण करना आदि।

प्रश्न 4. यदि कोई संगठन भौतिक एवं मानव संसाधनों के लिए उचित स्थान प्रदान नहीं करता है, तो यह कौन-से सिद्धान्त का उल्लंघन है? इसके परिणाम क्या है? . [NCERT)

उत्तर- यदि कोई संगठन भौतिक एवं मानव संसाधनों के लिए उचित स्थान प्रदान करता है, तो इसमें .व्यवस्था सिद्धान्त' का उल्लंघन होता है। इसके निम्नलिखित परिणाम होते हैं

(i) संसाधनों का दुरुपयोग,

(ii) दुर्घटनाओं की सम्भावना में वृद्धि,

(iii) अव्यवस्था का बोलबाला आदि।

प्रश्न 5. वैज्ञानिक प्रबन्ध की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- वैज्ञानिक प्रबन्ध की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं--

1. यह पूर्ण मानसिक परिवर्तन लाती है।

2. यह एक व्यवस्थित विचारधारा है।

3. इसके अन्तर्गत नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता है।

4. इसके अन्तर्गत उत्पादन सम्बन्धी निश्चित योजना का अग्रिम निर्माण भी सम्भव होता है।

5. यह परम्परागत प्रबन्ध की विरोधी होती है।

6. इसके अन्तर्गत लागत में कमी तथा उत्पादन में वृद्धि होती है।

प्रश्न 6. प्रबन्ध में व्यवस्था के सिद्धान्त को समझाइए।

उत्तर- फेयोल के अनुसार, "अधिकतम कार्यकुशलता के लिए लोग एवं सामान उचित समय पर उचित स्थान पर होने चाहिए।" वहीं व्यवस्था के सिद्धांत के अनुसार, "प्रत्येक चीज (प्रत्येक व्यक्ति) के लिए एक स्थान तथा प्रत्येक चीज (प्रत्येक व्यक्ति) अपने स्थान पर होनी चाहिए।" अत: इसका अर्थ है- व्यवस्था। यदि प्रत्येक चीज के लिए स्थान निश्चित है तथा यह उस स्थान पर है, तो व्यवसाय कारखाना की क्रियाओं में कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होगी तथा इससे उत्पादकता व क्षमता में बढ़ोतरी होगी।

प्रश्न 7. उस सिद्धान्त का नाम दें जो 'सहयोग, न कि व्यक्तिवाद का विस्तार है। [NCERT]

उत्तर- श्रम व प्रबंध में व्यक्तिवाद के स्थान पर पूर्णरूप से सहयोग होना चाहिए। यह सहयोग, न कि टकराव के सिद्धांत का विस्तार है। अत: प्रतियोगिता के स्थान पर सहयोग होना चाहिए। दोनों को यह समझना चाहिए कि दोनों को एक-दूसरे की जरूरत है। इसके लिए जरूरी है कि यदि कर्मचारियों

की ओर से कोई रचनात्मक सुझाव आता है, तो उस पर ध्यान देना चाहिए। यदि उनके सुझावों से लागत में ह्रास आता है, तो उन्हें इसका पुरस्कार अथवा सम्मान राशि मिलनी चाहिए। उनकी प्रबंध में साझीदारी होनी चाहिए तथा जब कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया जाए तो श्रमिकों को आश्वासन में लेना चाहिए।

प्रश्न 8. थकान के कोई दो कारण बताएँ जो कर्मचारी के प्रदर्शन में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। [NCERT]

उत्तर- थकान के दो कारण इस प्रकार हैं जो कि कर्मचारी के प्रदर्शन में बाधा उत्पन्न करते हैं---

(i) अनुपयुक्त कार्य करना।

(ii) कार्य लम्बे (अधिक) समय (घण्टों) तक करना।

प्रश्न 9. केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण में भेद बताइए।

उत्तर- यदि निर्णय लेने का अधिकार केन्द्रित है तो इसे 'केन्द्रीकरण' कहते हैं, जबकि यदि अधिकार एक से अधिक व्यक्तियों को सौंपा जाता है, तो इसे 'विकेंद्रीकरण' कहते हैं। फेयोल के अनुसार, अधीनस्थों का विकेंद्रीकरण द्वारा अंतिम अधिकारों को अपने पास रखने में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। वहीं केंद्रीकरण की सीमा कम्पनी की कार्य परिस्थितियों पर निर्भर करती है। सामान्य तौर पर बड़े स्तर के संगठनों में छोटे स्तर के संगठनों की अपेक्षा अधिक विकेंद्रीकरण होता है। उदाहरण के लिए भारत में सरकार द्वारा प्रदत्त निधि के संबंध में पंचायतों को गाँव के कल्याण हेत निर्णय लेने तथा उनको व्यय करने के अत्यधिक अधिकार दिए गए हैं। अत: यह राष्ट्रीय स्तर पर विकेंद्रीकरण है।

प्रश्न 10. "मानसिक क्रान्ति" को संक्षेप में बताइए।

उत्तर- मानसिक क्रान्ति से अभिप्राय प्रबन्धकों और श्रमिकों, दोनों पक्षों की मान्यताओं एवं विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना है। टेलर के अनुसार, "वैज्ञानिक प्रबन्ध से आशय उपक्रम में लगे श्रमिकों में पूर्ण क्रान्ति लाना है।" श्रमिकों में मानसिक क्रान्ति से अभिप्राय उनमें कार्य करने के लिए उत्तरदायित्व की भावना को जाग्रत करना, प्रबन्धकों के प्रति सद्भाव उत्पन्न करना और उनमें सहयोग उत्पन्न करना एवं उनमें सहयोग की भावना में वृद्धि करना है। प्रबन्ध वर्ग में होने वाली क्रान्ति से आशय-श्रमिकों के प्रति दष्टिकोण में परिवर्तन का होना है। इस प्रकार, दोनों पक्षों में सहयोग तथा सद्भावना को जाग्रत करना ही मानसिक क्रान्ति है। यह वैज्ञानिक प्रबन्ध का सार है।

प्रश्न 11. प्रबन्ध से क्या आशय है? [NCERT]

उत्तर- प्रबन्ध से आशय-प्रत्येक व्यावसायिक उपक्रम एक समूहबद्ध संस्था होती है, जो स्वयं कार्य नहीं करती है। उसे चलाने के लिए एक प्रेरक शक्ति की आवश्यकता होती है, जिसे 'प्रबन्ध' कहते हैं। यह समूह में कार्य करने वाले व्यक्तियों से चातुर्य एवं विवेक से काम लेने की एक पद्धति होती है, जिससे कि न्यूनतम व्यय पर अधिकतम, श्रेष्ठतम एवं समस्त उत्पादन सम्भव हो सके। इसके अन्तर्गत कर्मचारियों के एक समूह का नेतृत्व करके उनका मार्गदर्शन एवं समन्वय तथा अभिप्रेरण करने हेतु कार्यों का उचित प्रकार से संचालन करके पूर्व-निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए मनुष्यों एवं सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग करते हैं। इस प्रकार प्रबन्ध से आशय व्यवसाय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अन्य शक्तियों से कार्य लेने से होता है।

जो व्यक्ति प्रबन्ध के प्रकार्य का निष्पादन करते हैं, उनको 'प्रबन्धक', कार्यवाहक' या 'प्रशासक' कहा जाता है।

प्रश्न 12. प्रबन्ध को बहु-आयामी अवधारणा क्यों माना जाता है? (NCERT)

उत्तर- प्रबन्ध को बहु-आयामी अवधारणा इसलिए माना जाता है क्योंकि यह संगठन के उददेश्यों की प्राप्ति है। उद्यम के संसाधनों का कुशलता और प्रभावी ढंग से नियोजन, संगठन, अभिप्रेरण एवं नियन्त्रण की प्रक्रिया है। वैकल्पिक रूप में प्रबन्ध को हम प्रबन्धकों की भूमिका निर्वाह की विभिन्न प्रणालियों के कार्य एवं इन सभी पद्धतियों के समन्वय के दृष्टिकोण द्वारा समझ सकते हैं।

प्रश्न 13. "प्रबन्ध एक प्रक्रिया है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-- प्रबन्धक वह प्रक्रिया है जिसमें मानवीय और भौतिक साधनों के नियोजन, संगठन, निर्देशन एवं नियन्त्रण द्वारा पर्व-निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। प्रबन्ध की अवधारणा दारापन उसकी प्रकति स्पष्ट हो जाती है। प्रबन्ध प्रक्रिया द्वारा ही प्रबन्धक उद्देश्यपर्ण एवं रचनात्मक संगठनों का निर्माण करते हैं।

प्रश्न 14. समन्वय का अर्थ बताइए।

उत्तर- समन्वय वह शक्ति है, जो प्रबंध के अन्य सभी कार्यों को एक-दूसरे से बाँधती है। समन्वय एक ऐसा सूत्र है जो संगठन के कार्य में लगातार निरंतरता बनाए रखने के लिए क्रय, उत्पादन, विक्रय तथा

वित्त जैसे सभी कार्यों को बाँधे रखता है। समन्वय को अक्सर प्रबंध का एक भिन्न कार्य माना जाता है, परंतु यह एक प्रबंध का सार है क्योंकि यह संगठन के सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किए गए व्यक्तिगत प्रयासों में एकता लाता है।

प्रश्न 15. नियोजन का क्या आशय है?

उत्तर- नियोजन एक ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया है जिसका अर्थ कोई भी कार्य करने से पहले सोच-विचार करने से है। अन्य शब्दों में, नियोजन प्रबन्ध का एक आधारभूत कार्य होता है, जिसका अर्थ है-उद्देश्यों या लक्ष्यों का निर्धारण करना एवं उनकी प्राप्ति हेतु योजनाएँ बनाना। इसमें क्या कार्य, कब, कहाँ तथा कैसे करना होता है, इस बात का निश्चय किया जाता है।

प्रश्न 16. "प्रबन्ध एक अमूर्त शक्ति है" समझाइए।

उत्तर- प्रबंध एक अमूर्त शक्ति है, जो दिखाई नहीं देती लेकिन संगठन के कार्यों के रूप में इसकी उपस्थिति को अनुभव किया जा सकता है। किसी संगठन में प्रबंध के प्रभाव का भार योजनानुसार लक्ष्यों की प्राप्ति, प्रसन्न एवं संतुष्ट कर्मचारी के स्थान पर व्यवस्था के रूप में होता है।

प्रश्न 17. नियोजन का अर्थ स्पष्ट करके परिभाषित कीजिए।

उत्तर- नियोजन का अर्थ कुछ भी कार्य करने से पहले यह निश्चित करना है कि भविष्य में क्या करना है और कैसे करना है। इसके अन्तर्गत भावी घटना-क्रम का पूर्वानुमान लगाकर उसे वांछित दिशा प्रदान की जाती है। कण्ट्ज एवं ओ डोनेल के अनुसार, "क्या करना है, इसे कैसे करना है, इसे कब करना है और इसे किसके द्वारा किया जाना है, का पूर्वनिर्धारण करना ही नियोजन है।"

प्रश्न 18. योजना कैसे दिशा प्रदान करती है? [NCERT]

उत्तर- कार्य को किस प्रकार करना है? नियोजन इसका पहले ही मार्गदर्शन करके निर्देशन की व्यवस्था करता है। नियोजन लक्ष्य अथवा उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से बताकर विश्वास दिलाता है कि वे एक मार्गदर्शक के रूप में यह बताते हैं कि किस दिशा में क्या करना है। यदि लक्ष्यों को सही से समझाया गया है. तो कर्मचारियों को यह पता चलता है कि संगठन को क्या करना है तथा उन्हें लक्ष्यों तक पहुँचने हेत क्या करना चाहिए? विभिन्न संगठनों व विभागों के व्यक्ति कार्य में सामंजस्यता स्थापित

करने में सक्षम होते हैं। यदि कोई योजना नहीं होगी, तो कर्मचारियों की कार्य करने की दिशाएँ भिन्न होंगी और संगठन अपने लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने में असक्षम होगा।

प्रश्न 19. नियोजन नियंत्रण में कैसे सहायक होता है?

उत्तर- नियोजन की परिभाषा के अंतर्गत लक्ष्यों का निर्धारण भी शामिल है। संपूर्ण प्रबंधकीय प्रक्रिया में पहले से निर्धारित लक्ष्यों को पर्ण करना शामिल है तथा इसके कार्यों में नियोजन भी निर्देशन, संगठन तथा नियत्रण शामिल ह। नियोजन लक्ष्यों अथवा मानकों की व्यवस्था करता है जिस कारण वास्तावक निष्पादन का आंकलन भा सभव होता है। वास्तविक निष्पादन की तलना मानकों से करने पर हम यह ज्ञात कर सकते है क्या निस्सदह हमन लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है। यदि किसी प्रकार की भिन्नता ह, ता या आवश्यकता हो सकता है। अत: हम कह सकते हैं कि नियोजन नियंत्रण से पर्व की आवश्यकता है याद काइ लक्ष्य अथवा मानक न हो, तो भिन्नताओं का पता लगाना (जो नियंत्रण के आवश्यक अंग हैं) असभव होगा। दोषनिवारक कार्यवाही को आवश्यकता इस बात पर आश्रित है कि भिन्नताओं व मानकों में कितना अंतर है। अतः नियोजन ही नियंत्रण का आधार अथवा मूल है।

प्रश्न 20. नियोजन को एक चयन प्रक्रिया क्यों कहा जाता है?

उत्तर- संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भिन्न-भिन्न विधियों को अपनाया जाता है। इनमें कुछ लाभियाँ महँगी तथा अधिक समय लेने वाली होती हैं, जबकि कछ कम खर्चीली होती हैं। इन विधिया का लनात्मक अध्ययन करके उपयुक्त क्रियाविधि का चयन किया जाता है। ये सभी क्रियाएं नियोजन क अन्तर्गत ही आती हैं। अत: नियोजन को एक चयन प्रक्रिया कहा जाता है।

प्रश्न 21. "नियोजन' के अन्तर्गत 'नियम' का क्या अर्थ होता है? अथवा नियमों को योजना क्यों माना जाता है [NCERT]

उत्तर- 'नियोजन' के अन्तर्गत नियम पहले से निश्चित किए गए निर्णय होते हैं, जिनके द्वारा यह सनिश्चित किया जाता है कि किस परिस्थिति में क्या कार्य किया जाना चाहिए और क्या कार्य नहीं किया जाना चाहिए। इस प्रकार ये निश्चित होते हैं तथा किसी कार्यविधि के मार्गदर्शन का कार्य भी करते हैं। इनका पालन न किए जाने पर दण्ड का प्रावधान किया जाता है।

प्रश्न 22. क्या बदलते वातावरण में नियोजन कार्य करता है? अपने उत्तर को औचित्य देने का एक कारण दे [NCERT]

उत्तर- व्यावसायिक वातावरण अस्थिर अथवा परिवर्तनशील है, अर्थात् कुछ भी स्थायी नहीं है। वातावरण में बहुत-से पहलू शामिल होते हैं; जैसे-राजनैतिक, आर्थिक, कानूनी, भौतिक तथा सामाजिक। इन परिवर्तनों के अनुसार ही संस्थान अपनी आय को स्थायी रूप से बदल लेते हैं। यदि आर्थिक नीतियों को संशोधित कर दिया जाए या कोई प्राकृतिक आपदा आ जाए या देश की राजनैतिक दशा अस्थायी हो, तो वातावरण की प्रवृत्ति का सही-सही मूल्यांकन कठिन होता है। बाजार की प्रतियोगिता वित्तीय योजना को अस्त-व्यस्त कर देती है। बिक्री के लक्ष्य की पुनरावृत्ति करनी पड़ती है और रोकड़ बजट को भी संशोधित करना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि ये सभी बिक्री पर ही निर्भर होते हैं। नियोजन प्रत्येक वस्तु का भविष्य-ज्ञान नहीं रख सकता। अत: ये सभी प्रभाव नियोजन में अवरोध उत्पन्न कर देते हैं।

प्रश्न 23. 'प्रबन्धन के विस्तार' शब्द का क्या अर्थ है? [NCERT]

उत्तर- प्रबन्ध के विस्तार द्वारा संगठन ढाँचे को विस्तृत रूप प्रदान किया जाता है। प्रबन्ध के विस्तार से आशय एक पर्यवेक्षक द्वारा अपने कितने ही अधीनस्थों का प्रभावपूर्ण तरीके से पर्यवेक्षण किया जा सकता है। संगठन ढाँचे के अंतर्गत यह प्रबन्ध के स्तर को निर्धारित करता है। यह व्यावसायिक उपक्रम का उचित संगठन ढाँचा सम्प्रेषण प्रवाह को निर्बाध होने का विश्वास दिलाता है तथा संचालन पर उचित नियन्त्रण बनाए रखता है।

प्रश्न 24. कोई भी दो परिस्थितियाँ बताएँ जिनके तहत कार्यात्मक संरचना उचित विकल्प साबित होगी। [NCERT]

उत्तर- कार्यात्मक संरचना निम्न परिस्थितियों में उचित विकल्प साबित होगी---

1. जहाँ व्यावसायिक इकाई का आधार वृहद् हो,

2. जहाँ पर विशिष्टीकरण आवश्यक हो।

प्रश्न 25. अनौपचारिक संगठन औपचारिक संगठन का समर्थन कैसे करता है? [NCERT]

उत्तर- अनौपचारिक संगठन औपचारिक संगठन में उपस्थित कमियों को दूर करके संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में उचित सहायता प्रदान करता है। उदाहरणस्वरूप, कर्मचारियों द्वारा योजनाओं एवं नीतियों के प्रति कोई भी प्रतिक्रिया अनौपचारिक तन्त्र (नेटवर्क) द्वारा परखी जा सकती है।

प्रश्न 26. संगठन प्रक्रिया के तीन चरण लिखिए।

उत्तर- संगठन प्रक्रिया के निम्नलिखित तीन चरण हैं---

1. कार्य की पहचान तथा विभाजन,

2. विभागीकरणं, एवं

3. कर्त्तव्यों का निर्धारण।

प्रश्न 27. 'संगठन' को प्रबन्ध के कार्य के रूप में परिभाषित करें।

अथवा

"संगठन' को प्रबन्ध का तन्त्र क्यों कहा जाता है?

उत्तर- संगठन व्यवसाय में निर्धारित लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक प्राप्त करने का एक साधन है। प्रबन्ध की योजना इसी संगठन के माध्यम से लागू होती है तथा प्रबन्ध का निर्देशन एवं नियन्त्रण का कार्य भी इसी संगठन के चारों ओर घूमता है। इस कारण संगठन को प्रबन्ध का तन्त्र कहते हैं।

प्रश्न 28. केन्द्रीकृत तथा विकेन्द्रीकृत का अर्थ बताइए।

उत्तर- यदि निर्णय लेने का अधिकार केवल उच्च स्तर के प्रबंधन को ही होता है, तो ऐसे संगठन को 'केंद्रीकृत' कहा जाता है। यदि यही अधिकार अंतरित कर दिया जाए, तो वह संगठन 'विकेंद्रीकृत' कहा जाता है। पूर्ण रूप से केंद्रीकरण तभी कहलाता है, जब प्रबंध में निर्णय लेने का अधिकार केंद्रीय तौर पर उत्तराधिकार सोपानिकी में केवल शीर्ष स्तरीय प्रबंधकों को ही होता है। प्रबंध सोपानिकी की आवश्यकता को इस प्रकार की संरचना अनावश्यक कर देती है।

प्रश्न 29. अधिकार से क्या आशय है?

उत्तर- अधिकार से आशय एक व्यक्ति विशेष के उस अधिकार से है, जिसके आधार पर उसके द्वारा अपने अधीनस्थों को नियंत्रित किया जाता है तथा वह अपने पद-अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत ही कार्यवाही करता है। अधिकार की धारणा का निर्धारण सोपना-श्रृंखला से शुरू होता है, जो संगठन के विभिन्न स्तरों व स्थितियों को जोड़ती है। औपचारिक संगठन के अंतर्गत एक व्यक्ति को उसकी व्यक्तिगत स्थितिनसार अधिकार प्राप्त होते हैं। उसकी स्थितिनुसार अधिकार बढ़कर उच्चतम स्तर के हो सकते हैं तथा घटकर निगम के निम्नतम स्तर तक भी जा सकते हैं। अत: अधिकारों का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर होता है तथा उच्च आधकारी को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त होते हैं। अधिकार सम्बद्ध संस्थान में प्रबंधक के स्वयं के कार्यबल को स्पष्ट निर्देशन व आज्ञाकारिता पर कानून व्यवस्था को बनाए रखने में सहायक होते हैं।

प्रश्न 30. अधिकार अंतरण के तत्वों की संक्षेप में समीक्षा कीजिए।

उत्तर---- अंतरण के तत्वों की समीक्षा

आधार	अधिकार	उत्तरदायित्व	उत्तरदेयता
अर्थ	आदेश का अधिकार।	निर्दिष्ट कार्यों को पूरा करने का आधार।	निर्दिष्ट कार्य के परिणाम फल की उत्तरदेयता।
अंतरण	अंतरित किये जा सकते हैं।	पूर्णरूपेण अंतरित नहीं किये जा सकते।	अंतरित नहीं किये जा सकते।
उद्गम	औपचारिक स्थिति से चलते हैं।	अधिकार अंतरण से प्रारंभ होते हैं।	उत्तरदेयता से प्रारंभ होते हैं।
प्रवाह	प्रवाह उच्चाधिकारी से नीचे की ओर अधीनस्थ कर्मचारियों की ओर।	प्रवाह अधीनस्थों से ऊपर के उच्चाधिकारियों की ओर।	प्रवाह अधीनस्थ से ऊपर की ओर उच्चाधिकारियों की ओर।

प्रश्न 31. केन्द्रीकरण तथा विकेन्द्रीकरण में अन्तर्भेद कीजिए।

उत्तर- केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण में मुख्य अन्तर यही है कि केन्द्रीकरण में निर्णय लेने का अधिकार केवल उच्च स्तरीय प्रबन्ध को ही होता है जबकि विकेन्द्रीकरण में निर्णय लेने का अधिकार निम्न स्तर के प्रबन्ध को होता है।

प्रश्न 32. क्रियात्मक संगठन को समझाइए। अथवा कार्यात्मक संगठन से क्या आशय है?

उत्तर- क्रियात्मक (कार्यात्मक) संगठन में व्यावसायिक संस्था को उसके द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों (जैसे-उत्पादन, विपणन, वित्त एवं सेविवर्गीय आदि) के आधार पर विभाजित किया जाता है और फिर उन्हें इस कार्य के विशेषज्ञों के हाथों में सौंपा जाता है। ये विशेषज्ञ अपने कार्य-क्षेत्र से सम्बन्धित कार्य के लिए सम्पूर्ण संगठन में कर्मचारियों का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

प्रश्न 33. क्या एक बड़े आकार के संगठन को पूरी तरह से केन्द्रीकृत अथवा विकेन्द्रीकृत किया जा सकता है? अपना सुझाव दीजिए। [NCERT]

उत्तर- कभी भी कोई भी संस्था न तो पूर्ण रूप से केन्द्रीकृत हो सकती है और न ही कभी पूर्ण रूप से विकेन्द्रीकृत हो सकती है। जब कोई संस्था आकार तथा जटिलताओं की ओर अग्रसर होती है तो यह देखा जाता है कि वे संस्थाएँ निर्णयों में विकेन्द्रीकरण को अपनाती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बड़े-बड़े संस्थानों में जहाँ कर्मचारियों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से कार्य संचालन में आलिप्त करते हैं, उनका ज्ञान तथा अनुभव उन उच्चस्तरीय प्रबन्धकों से कहीं अधिक होता है जो संस्थान से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हए होते हैं। इस प्रकार केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण कार्यविधियों में परस्पर सन्तुलन स्थापित करने की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 34. नियुक्तीकरण का क्या आशय है?

उत्तर- नियुक्तिकरण से आशय संगठन में स्थापित भिन्न-भिन्न पदों पर महत्वपूर्ण योग्य व्यक्तियो को नियुक्त करने से है। अन्य शब्दों में, पद और व्यक्ति में सामंजस्य स्थापित करने हेतु की जाने वाली सभी क्रियाएँ नियुक्तिकरण के अन्तर्गत आती हैं।

प्रश्न 35. भर्ती का अर्थ समझाइए।

उत्तर- संभावित कर्मचारी को खोजने की प्रक्रिया तथा उन्हें संगठन में पदों हेतु आवेदन देने के लिए प्रेरित करने को 'भर्ती' कहा जाता है।

प्रश्न 36. भर्ती के दो महत्त्वपूर्ण स्रोत बताएँ। [NCERT]

उत्तर- भर्ती के दो महत्त्वपूर्ण स्रोत निम्नलिखित हैं–

(i) श्रम-पूर्ति सम्बन्धी विभिन्न स्रोतों की पहचान,

(ii) सबसे उपयुक्त स्रोत या स्रोतों का चयन करना।

प्रश्न 37. चयन से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर- चयन एक ऐसी प्रक्रिया है जो भर्ती के दौरान बनाए गए सम्भावित पद-प्रत्याशियों के निकाय में से कर्मचारियों का चयन करती है।

प्रश्न 38. प्रशिक्षण, शिक्षा तथा विकास को संक्षेप में समझाइए।

उत्तर- प्रशिक्षण, विकास एवं शिक्षा-यहाँ यह समझना जरूरी है कि 'प्रशिक्षण', 'शिक्षा' व 'विकास' अलग-अलग शब्द हैं जो कुछ सीमा तक पारस्परिक रूप से संबंधित हैं।

प्रशिक्षण---- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कर्मचारियों की कौशल-क्षमता व योग्यता में बढ़ोतरी की जाती है, जिससे वे अपने विशेष कार्यों का निष्पादन श्रेष्ठ तौर पर कर सकें।

शिक्षा-- यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कर्मचारियों के ज्ञान तथा बोध में बढ़ोतरी की जाती है।

विकास– इससे आशय सीखने के सुअवसरों का निर्माण करने से है, जो कर्मचारियों के विकास में सहयोग प्रदान करती है।

प्रश्न 39. बाह्य स्रोत की क्या कमियाँ/सीमाएँ हैं?

उत्तर- बाह्य स्त्रोत की कमियाँ/सीमाएँ निम्नलिखित हैं----

(क) वर्तमान कर्मचारियों में असंतोष की भावना--- बाह्य भर्ती द्वारा कार्यरत कर्मचारियों में एक निराशा तथा असंतोष की भावना पैदा की जाती है। उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी पदोन्नति के अवसर कम हो रहे हैं।

(ख) महँगी प्रक्रिया---- बाह्य स्रोत के माध्यम से भर्ती पर लागत अधिक आती है। बहुत-से रुपये विज्ञापन व

आवेदन-पत्रों की छंटनी में ही व्यय हो जाते हैं।

प्रश्न 40. 'बुद्धि परीक्षाएँ' का अर्थ बताइए।

उत्तर- यह उन आवश्यक मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं में से एक है, जिसका उपयोग व्यक्ति के बुद्धि-कोष के स्तर के मापन हेतु किया जाता है। यह व्यक्ति के निर्णय लेने अथवा सीखने की योग्यता तथा जाँच-पड़ताल की योग्यता को मापने का संकेतक है।

प्रश्न 41. प्रशिक्षण तथा विकास प्रक्रिया से कर्मचारियों को क्या लाभ होते हैं? बताइए।

उत्तर- प्रशिक्षण तथा विकास प्रक्रिया से कर्मचारियों को निम्नलिखित लाभ होते हैं---

(क) प्रशिक्षण के कारण कौशल व ज्ञान में सुधार द्वारा व्यक्ति की जीवन-वृत्ति को भी श्रेष्ठ बनाया जाता है।

(ख) कार्य का श्रेष्ठ निष्पादन व्यक्ति को अधिक कमाने में सहायता करता है।

प्रश्न 42. निर्देशन का अर्थ बताइए।

उत्तर- साधारणत: निर्देशन से तात्पर्य निर्देश देने और व्यक्तियों के कार्य में मार्गदर्शन करने से है। दिन-प्रतिदिन हमारे समक्ष ऐसी बहुत-सी स्थितियाँ आती हैं; जैसे-एक शिक्षक अपने छात्रों को निर्देश देता है कि वे किस प्रकार अपने दत्त कार्य (असाइनमेण्ट) को पूर्ण करें, कोई होटल प्रबंधक अपने कर्मचारियों को किसी कार्यक्रम को आयोजित करने हेतु निर्देश देता है, एक चलचित्र निदेशक अपने कलाकारों को निर्देश देता है कि वे फिल्म में कैसे अभिनय करें इत्यादि। अत: इन सभी स्थितियों में हम देखते हैं कि पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए निर्देशन किया गया है। संगठन के प्रबंधन के संदर्भ में निर्देशन व्यक्तियों को निर्देश देने, उनका मार्गदर्शन करने, परामर्श देने, अभिप्रेरित करने तथा कुशल नेतृत्व प्रदान करने की प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति करना है।

प्रश्न 43. 'निर्देशन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।' समझाइए।

उत्तर- निर्देशन एक सतत् तथा संगठन के सम्पूर्ण कार्यकाल में चलने वाली प्रक्रिया है। साथ ही यह निरपेक्ष (बगैर ध्यान रखे) भी है कि कौन व्यक्ति प्रबंधकीय पदों पर कार्यरत है। आप देख सकते हैं कि टाटा, इन्फोसिस, HCL तथा BHEL जैसी संस्थाओं में प्रबंधक बदल सकते हैं, लेकिन निर्देशन की प्रक्रिया लगातार चलती रहती है क्योंकि निर्देशन के बगैर सांगठनिक क्रियाएँ आगे नहीं चल सकतीं।

प्रश्न 44. पर्यवेक्षक कौन है?

उत्तर- पर्यवेक्षक वह व्यक्ति होता है जो अपने अधीनस्थों और उनके द्वारा किए गए कार्यों की देखरेख करता है तथा संसाधनों में अनुकूलतम उपयोग को सुनिश्चित करने हेतु निर्देश देता है।

प्रश्न 45. निर्देशन के प्रमुख तत्त्व कौन-कौन से हैं? नाम लिखिए।

उत्तर- निर्देशन के तत्त्वों को चार वर्गों में बाँटा जाता है- 1. पर्यवेक्षण, 2. अभिप्रेरणा, 3. नेतृत्व तथा 4. संप्रेषण।

प्रश्न 46. पर्यवेक्षण के प्रमुख तत्त्वों के नाम बताइए।

उत्तर- पर्यवेक्षण के प्रमुख तत्त्व हैं- 1. आदेश एवं निर्देश देना, 2. मार्गदर्शन करना तथा 3. नियन्त्रण करना।

प्रश्न 47. मास्लो की विचारधारा की कोई एक मान्यता लिखिए।

उत्तर- मास्लो की विचारधारा की मान्यता के अनुसार लोगों की आवश्यकताएँ अनेक हैं तथा उनका क्रम निर्धारित किया जा सकता है।

प्रश्न 48. अभिप्रेरणा के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- अभिप्रेरण एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जो अधीनस्थों को निर्धारित सांगठनिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एक वांछित रूप से कार्य करने हेतु तैयार करती है। अभिप्ररेण का महत्त्व निम्न प्रकार है---

1. यह कर्मचारियों के निष्पादन स्तर में सुधार करने के साथ-साथ संगठन के सफल निष्पादन में भी सहायक होती है।

2. यह कर्मचारियों के नकारात्मक अथवा निष्क्रिय/तटस्थ दृष्टिकोण को सांगठनिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उनके सकारात्मक रूपान्तरण में सहायक होता है।

3. यह कर्मचारियों द्वारा संस्था को छोड़कर जाने की दर को कम करती है तथा इस कारण नई नियुक्ति तथा प्रशिक्षण लागत में भी बचत होती है।

4. यह संगठन की अनुपस्थिति को भी कम करने में सहायक होती है।

5. यह प्रबन्धकों को नए परिवर्तनों को आरम्भ करने में बिना लोगों के विरोध के सहायक होती है।

प्रश्न 49. अनौपचारिक संचार क्या है? [NCERT]

अथवा

अनौपचारिक सम्प्रेषण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- व्यक्तियों तथा समूहों के बीच होने वाले संप्रेषण (जो औपचारिक/आधिकारिक तौर पर नहीं होते हैं) ही 'अनौपचारिक संप्रेषण' कहलाता है, जिसमें विचारों व सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है। सामान्यत: इस प्रकार की संप्रेषण सूचना प्रणाली को 'अंगूरीलता संप्रेषण' कहा जाता है, क्योंकि (ये सूचनाएँ जो अंगूरीलता द्वारा संगठन के अंतर्गत सभी ओर बगैर किसी आधिकारिक स्तर के आधार पर होती हैं) अंगूरीलता औपचारिक संप्रेषण के स्रोतों को नहीं अपनाते हैं।

अनौपचारिक संप्रेषण की आवश्यकता का प्रमुख कारण कर्मचारियों के विचारों का आपस में आदान-प्रदान है जो औपचारिक संप्रेषण द्वारा असंभव है, वह इस माध्यम से पूरा होता है। कैंटीन में आपस में चर्चा करते समय जब कर्मचारी अपने अधिकारियों के व्यवहार के विषय में चर्चा करते हैं अथवा अफवाहें उड़ाते हैं कि कुछ कर्मचारियों का स्थानान्तरण होना है आदि उदाहरण अनौपचारिक संप्रेषण के अंतर्गत ही आते हैं। संस्था में अंगूरीलता/अनौपचारिक संप्रेषण बहुत तीव्रता से फैलता है और कभी-कभी इनका स्वरूप बिगड़ जाए, तो वह हानिकारक हो सकता है।

प्रश्न 50. नेतृत्व की कौन-सी शैली शक्ति के उपयोग में विश्वास नहीं करती; जब तब कि यह बिल्कुल जरूरी न हो? [NCERT]

उत्तर- मुक्त रोक, नेता अथवा आबंध शैली शक्ति के उपयोग में विश्वास नहीं करती, जब तक कि यह बिल्कुल जरूरी न हो।

प्रश्न 51. औपचारिक तथा अनौपचारिक संप्रेषण में अन्तर बताइए।

उत्तर-- औपचारिक एवं अनौपचारिक सम्प्रेषण में अन्तर क्र०सं० |

क्र०सं०	औपचारिक सम्प्रेषण	अनौपचारिक सम्प्रेषण
1.	इसका स्वरूप और मार्ग पूर्व-निर्धारित होता है।	इसका स्वरूप निर्धारित नहीं होता है।
2.	यह उपक्रम की अधिकृत सूचना व्यवस्था होता है।	यह कर्मचारियों की पारस्परिक सूचना व्यवस्था होता है।
3.	इसके आदान-प्रदान की पृष्ठभूमि में अधिकार एवं सत्ता का भय बना रहता है।	इसके आदान-प्रदान की पृष्ठभूमि में घनिष्टता तथा आत्मीयता का मिश्रण होता है।
4.	इसका आदान-प्रदान संस्था के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।	यह व्यक्तिगत उद्देश्यों द्वारा प्रभावित होता है।
5.	यह प्राय: लिखित व नियमानुकूल होता है।	यह प्राय: मौखिक व मैत्रीपूर्ण होता है।
6.	इसमें संवैधानिक श्रृंखला का पालन होता है।	इसमें कर्मचारियों के पारस्परिक सम्बन्धों की निकटता का पालन होता है।

प्रश्न 52. पूँजी संरचना का क्या अर्थ है? [NCERT)

उत्तर- पूजा सरचना से आशय पूँजी के स्वरूप के निर्धारण से है। अन्य शब्दों में, पँजी संरचना में यह निर्धारित होता है कि पूँजी की रकम किन-किन प्रतिभूतियों द्वारा और किस अनुपात में प्राप्त की जाए।

प्रश्न 53. वित्तीय नियोजन के दो उद्देश्यों पर चर्चा करें। [NCERT]

उत्तर- वित्तीय नियोजन के दो उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1 निधियों की आवश्यकतानसार उनकी उपलब्धता का आश्वासन देना---- वित्तीय नियाजन का प्रथम उद्दश्य निधियों के कई उद्देश्यों का आवश्यकतानसार एक अनुमान लगाना है। यह निधियों के सम्भावित स्रोतों को समझाने का कार्य भी करता है।

2. यह देखना कि फर्म संसाधनों में अनावश्यक रूप से वृद्धि नहीं करती है–- वित्तीय नियोजन का दसरा प्रमुख उददेश्य यह है कि फर्म अपने संसाधनों में अनावश्यक रूप से वृद्धि तो नहीं कर रहा है क्योंकि कोषों का आधिक्य प्रत्येक दशा में उपयुक्त नहीं होता है।

प्रश्न 54. 'वित्तीय जोखिम' क्या है? यह क्यों उठता है? [NCERT]

उत्तर- वित्तीय जोखिम से आशय-साधारण शब्दों में यदि कोई कम्पनी अपने निश्चित वित्तीय व्ययों; जैसे-ब्याज, पूर्वाधिकार लाभांश एवं ऋण की मूल वापसी आदि का भुगतान करने में समर्थ नहीं है तो

इसे वित्तीय जोखिम कहते हैं। वित्तीय जोखिम का अभ्युदय-किसी भी संस्था में यदि वित्तीय लीवरेज की मात्रा (ऋण पूँजी एवं पूर्वाधिकार अंश पूँजी) अधिक होती है तब वित्तीय जोखिम का उदय होता है। क्योंकि स्थायी लागतों में वृद्धि होने से इनको पूरा करने हेतु कम्पनी को अधिक EBIT की आवश्यकता होती है। वित्तीय व्ययों का भुगतान करने में असमर्थ होने पर उसे समापन के लिए मजबूर किया जाता है।

प्रश्न 55. 'चालू परिसंपत्ति परिभाषित करें। ऐसी परिसंपत्तियों के चार उदाहरण दें। NCERT]

उत्तर- चाल सम्पत्तियों की परिभाषा---- ऐसी सम्पत्तियाँ जो एक वर्ष में ही बिना कटौती के रोकड़ अथवा रोकड़ के तुल्य परिवर्तित हो जाती हैं, 'चालू सम्पत्तियाँ' कहलाती हैं। ऐसी सम्पत्तियाँ प्राय: अधिक तरल मानी जाती हैं तथा स्थायी सम्पत्तियों की अपेक्षा कम लाभदायक होती हैं।

चालू सम्पत्तियों के उदाहरण--- चालू सम्पत्तियों के उदाहरण उनके तरलता क्रम में निम्नलिखित हैं---

(i) रोकड़ शेष एवं बैंक शेष, (ii) विक्रय योग्य प्रतिभूतियाँ, (iii) प्राप्यबिल एवं देनदार, तथा (iv) कच्चा माल, अर्द्ध-निर्मित्त माल एवं तैयार या निर्मित माल।

प्रश्न 56. कार्यशील पूँजी तरलता के साथ-साथ व्यवसाय की लाभप्रदता को कैसे प्रभावित करती है? [NCERT]

उत्तर- सामान्यत: व्यवसाय में कार्यशील पूँजी की मात्रा व्यवसाय की आवश्यकता के अनुसार ही होनी चाहिए अर्थात् यह न ही अधिक होनी चाहिए और न ही कम। क्योंकि दोनों ही परिस्थितियों में ये हानिकारक होती हैं। आवश्यकता से ज्यादा होने पर इससे तरलता में वृद्धि हो जाती है तथा लाभप्रदता में कमी आती है। उदाहरण के लिए, यदि कार्यशील पूंजी के रूप में संस्था में अधिक मात्रा में रोकड़ रख ली जाती है तो वह . व्यर्थ ही पड़ी रहेगी इससे लाभप्रदता में कमी आएगी। इसके विपरीत यदि रोकड़ या अन्य चाल सम्पत्नियाँ कम मात्रा में होंगी तो हो सकता है, संस्था को लेनदारों और दैनिक व्ययों का भुगतान करने में कठिनाई उत्पन्न हो। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि कार्यशील पूंजी एक व्यवसाय की तरलता लाभदायक दोनों को ही प्रभावित करती है।

प्रश्न 57. स्थायी पूँजी का अर्थ बताइए।

उत्तर- किसी भी व्यवसाय को निधि की आवश्यकता उसकी.संपत्तियों के क्रय एवं क्रियाओं के सचारु रूप से संचालन के लिए होता है। कंपनी को प्राय: चालू संपत्तियों एवं स्थायी संपत्तियों में निवेश की

जरूरत होती है । ऐसी सपत्तियाँ जो लंबे समय तक कार्यान्वित रहती हैं. स्थायी संपत्तियों कहलाती हैं। उदाहरन के तौर पर वाहन, मकान, भूमि, मशीन, फीचर आदि।

प्रश्न 58. कार्यशील पूँजी से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- कार्यशील पँजी से अभिप्राय फर्म की अल्पकालीन संपत्तियों; जैसे कि स्टाक और अल्पकालीन दायित्वों; जैसे-लेनदार देय बिल इत्यादि से है। स्थायी संपत्तियों में निवेश के अलावा किसी संगठन को चालू संपत्तियों में भी निवेश की जरूरत होती है। ऐसी निवेश सुविधा के जरिए दैनिक संचालन क्रियाओं को आसानी से बनाए रखने में सहायता प्राप्त होती है। चालू संपत्तियाँ अधिक तरल होती हैं।

प्रश्न 59. अंश पूँजी ऋण पूँजी से बेहतर क्यों है?

उत्तर- पूँजी ढाँचे का चयन करते समय भविष्य में रोकड़ स्थिति का ध्यान रखना आवश्यक होता है। अत: रोकड़ स्थिति अत्यधिक अच्छी होने पर ऋण पूँजी का प्रयोग करना श्रेष्ठ होता है। ऋण पूंजी पर ब्याज तथा मूल राशि को वापस करने के लिए बहुत अधिक रोकड़ की आवश्यकता होती है। अत: यह कहा जा सकता है कि अंश पूँजी ऋण पूँजी से बेहतर होती है।

प्रश्न 60. वित्तीय निर्णय को प्रभावित करने वाले किन्हीं चार कारकों के नाम बताइए।

उत्तर- वित्तीय निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक-वित्तीय निर्णय को प्रभावित करने वाले कारक इस प्रकार हैं-

1. लागत, 2. जोखिम, 3. प्रवर्तन लागत तथा 4. रोकड़ प्रवाह स्थिति।

प्रश्न 61. वित्तीय नियोजन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- वित्तीय नियोजन--- वित्तीय नियोजन का अर्थ यह निश्चित करना है कि कितना खर्च करना है और किस पर खर्च करना है। वित्तीय नियोजन की मुख्य दो क्रियाएँ इस प्रकार हैं---

1. व्यवसाय के लिए कोषों की आवश्यकताओं का अनुमान लगाने की प्रक्रिया।

2. कोषों के स्रोत को निर्धारित करना।

प्रश्न 62. वित्तीय निर्णय से क्या आशय है?

उत्तर- वित्तीय निर्णय से आशय सर्वोत्तम वित्तीय विकल्प या सबसे अच्छा विनियोग विकल्प है। वित्तीय निर्णय का अर्थ तीन विस्तृत निर्णयों से है जो निम्नलिखित हैं–

(i) निवेश संबंधी निर्णय (ii) वित्तीयन संबंधी निर्णय (ii) लाभांश संबंधी निर्णय

प्रश्न 63. करारोपण नीति को समझाइए।

उत्तर- करारोपण नीति–लाभांश की दर भी सरकार की कर नीति पर निर्भर करती है। वर्तमान कर पद्धति के अंतर्गत अंशधारियों के लिए लाभांश आय कर-मुक्त आय होती है जबकि कंपनी को अंशधारियों को दिए जाने वाले लाभांश पर कर का भुगतान करना पड़ता है। यदि लाभांश पर करों का भार अधिक होगा तो अच्छा होगा एवं लाभांश के भुगतानार्थ कम धनराशि का भुगतान करना पड़ेगा। इसकी तुलना में यदि कर की दर कम होगी तो लाभांश भुगतान की राशि अधिक होगी। इस प्रकार कर की आधनिक नीति के आधार पर अंशधारी ऊँची लाभांश राशि को ही प्राथमिकता देते हैं।

प्रश्न 64. मुद्रास्फीति के विषय में बताइए।

उत्तर- मुद्रास्फीति-मुद्रास्फीति के अधिक होने से कार्यशील पूंजी की आवश्यकता भी बढ़ जाती हे क्योंकि मुद्रास्फीति की अवस्था में प्रत्येक वस्तु के मूल्य में बढ़ोतरी हो जाती है एवं बिकी को स्थायी बनाए रखने के लिए अधिक धन की आवश्यकता पड़ती है लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि जिस प्रतिशत में मुद्रा प्रसार की दर बढ़ेगी उसी प्रतिशत में कार्यशील पूँजी की मात्रा भी बढ़ेगी। वास्तविक कार्यशील पूंजी की जरूरत कई घटकों; जैसे-श्रम लागत, कच्चा माल, अर्द्धनिर्मित माल तैयार माल आदि के मल्यों म वृद्धि के अनुसार होगी एवं उसका कुल आवश्यकता में क्या अनुपात है, इन कई बातों पर भी कार्यशील पूजा की आवश्यकता पर प्रभाव पड़ेगा।

प्रश्न 65. 'समता पर व्यापार' (इक्विटी पर ट्रेडिंग) शब्द की व्याख्या करें। कम्पनी द्वारा इसे क्यों, कब और कहा कैसे उपयोग किया जा सकता है? [NCERT]

उत्तर-- समता पर व्यापार

समता पर व्यापार से आशय समता अंश पूँजी के आधार पर स्थायी लागत पूँजी (ऋण पूँजी एवं पूर्वाधिकार अश पूजी) प्राप्त करके समता अंशधारियों की आय में वृद्धि करने से है। ऐसा प्रायः उसी स्थिति में सम्भव है जब कम्पनी की आय दर, ऋण पूँजी पर ब्याज दर अथवा पूर्वाधिकार अंशों की

लाभांश दर से अधिक हो। 'समता पर व्यापार' मद को एक व्यावसायिक संगठन द्वारा क्यों और कैसे अपनाया जा सकता है--- समता पर व्यापार को एक व्यावसायिक संगठन द्वारा सस्ते दर की ब्याज पर ऋण लेकर अपनाया जाता है। किसी भी कम्पनी को लापरवाही से समता पर व्यापार की अनुशंसा नहीं की जा सकती क्योंकि ऋण की मात्रा में वृद्धि होने से वित्तीय जोखिम में भी वृद्धि होती है। संक्षेप में, एक कम्पनी को इस प्रकार के जोखिम प्रतिफल सम्मिश्रण का चुनाव करना चाहिए जिससे अंशधारियों की सम्पदा में अधिक-से-अधिक वृद्धि हो सके।

प्रश्न 66. पूँजी संरचना निर्णय अनिवार्य रूप से जोखिम वापसी सम्बन्धों का अनुकूलन है। टिप्पणी करें।[NCERT]

उत्तर- यह कथन सत्य है कि पूँजी संरचना निर्णय अनिवार्य रूप से जोखिम वापसी सम्बन्धों का अनुकूलन है। इसका कारण यह है कि पूँजी संरचना के अन्तर्गत व्यवसाय हेतु ऋण सस्ता होता है परन्तु अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। ऋण पर ब्याज और मूल राशि का भुगतान व्यवसाय को ही करना चाहिए। ऋणों का अधिक उपयोग एक व्यवसाय के स्थायी व्यय को बढ़ाता है, परिणामस्वरूप ऋणों का बढ़ता हुआ प्रयोग व्यवसाय के वित्तीय जोखिम में भी वृद्धि करता है। इस प्रकार पूँजी संरचना लाभदायकता तथा वित्तीय जोखिम दोनों को प्रभावित करती है।

प्रश्न 67. ट्रेजरी बिल क्या है? [NCERT]

उत्तर- राजकोष (ट्रेजरी) बिल-यह बिल मुख्यतः एक वर्ष से कम अवधि में परिपक्व होने वाले भारत सरकार के द्वारा ऋणदान के रूप में दिया जाने वाला एक लघुकालिक प्रपत्र होता है। इस प्रपत्र का शून्य कूपन बंधयक भी कहा जाता है, जिसे केन्द्रीय सरकार के पक्ष में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निधि की लघुकालिक आवश्यकताओं के लिए जारी किया जाता है।

प्रश्न 68. वित्तीय बाजार किसे कहते हैं?

उत्तर- वित्तीय बाजार वह है, जो वित्तीय परिसंपत्तियों के विनिमय व सजन के लिए एक बाजार बनाता है वितीय बाजार उसी स्थान पर अस्तित्व में आता है जहाँ पर कोई वित्तीय लेन-देन होता है। ये वित्तीय लेन-देन किसी भी वित्तीय परिसंपत्ति की रचना के रूप में हो सकते हैं: जैसे–किसी व्यावसायिक फर्म द्वारा शयर अथवा ऋण-पत्री (डिबेंचर्स) का आरंभिक निर्गमन या विद्यामान वित्तीय परिसंपत्तियों (इक्विटी शेयरों ऋण-पत्रों एवं बंध-पत्रों) का क्रय-विक्रय करना आदि।

प्रश्न 69. एन०एस०ई० के खण्डों का नाम दें। [NCERT]

अथवा

एन०एस०ई० के खण्डों की व्याख्या करें।

उत्तर- राष्ट्रीय शेयर बाजार (एन० एस०ई०) के बाजार खण्ड-राष्ट्रीय शेयर बाजार के अन्तर्गत मुख्यत: निम्नलिखित दो खण्ड सम्मिलित किए जाते हैं

1. थोक विक्रय ऋण बाजार खण्ड (होलसेल डेब्ट मार्केट सेगमेंट)--- एन०एस०ई० का यह खण्ड व्यापक दायरे वाली स्थिर आय प्रतिभूतियों के लिए एक व्यापार मंच प्रदान करता है। इसके अन्तर्गत, केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियाँ, राजकीय बिल, राज्य विकास ऋण, सार्वजनिक क्षेत्र के निगमों द्वारा जारी किए गए बंधपत्र (बांड्स), अस्थायी/चल पूँजी दर (फ्लोटिंग रेट) बंधपत्र, शून्य कूपन बंधपत्र, सूचकांक बंधपत्र, वाणिज्यिक-पत्र, बचत प्रमाण-पत्र, निगमों के द्वारा जारी किए गए ऋण-पत्र तथा म्युचुअल फंड सम्मिलित किए जाते हैं।

2. पूँजी बाजार खण्ड---- एन०एस०ई० का यह खण्ड इक्विटी, शेयर (अधिमान), ऋणपत्र, एक्सचेंज व्यापार खण्ड के साथ-साथ फुटकर सरकारी प्रतिभूतियों के लिए एक सक्षम एवं पारदर्शी मंच प्रदान करता है।

प्रश्न 70. स्टॉक एक्सचेंज को परिभाषित कीजिए।

उत्तर- पॉयले के अनुसार, "स्टॉक एक्सचेंज (शेयर बाजार) से आशय ऐसे बाजार से है जहाँ पर सूचीबद्ध प्रतिभूतियों का विनियोग अथवा सट्टे हेतु क्रय-विक्रय किया जाता है।"

प्रश्न 71. शेयर बाजार की किन्हीं दो विशेषताओं को बताइए।

उत्तर- शेयर बाजर की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं---

1. शेयर बाजार एक संगठित बाजार होता है। इसमें होने वाले सभी व्यवहारों को निश्चित प्रक्रिया के अनुसार प्रबन्ध समिति की देखरेख में सम्पन्न किया जाता है।

2. शेयर बाजार में प्रायः उन्हीं संस्थाओं की प्रतिभूतियों में व्यवहार किया जाता है जो वहाँ पर सचीबद्ध रूप में होती है।

प्रश्न 72. सेबी (SEBI) की स्थापना कब और क्यों की गई थी?

उत्तर- सेबी का पूरा नाम 'भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (SEBI)' है। इसकी स्थापना 12 अप्रैल, 1988 में की गई थी तथा उसे 30 जनवरी, 1992 में वैधानिक संस्था का दर्जा प्रदान किया गया था। इसकी स्थापना विशेष रूप से निवेशकों के हितों की सुरक्षा एवं प्रतिभूति बाजार के विकास तथा विनियमन के लिए की गई थी।

प्रश्न 73. एन०एस०ई० क्या है? बताइए।

उत्तर- एन०एस०ई० का पूरा नाम 'भारतीय राष्ट्रीय शेयर बाजार' (National Stock Exchange) है। यह एक नवीन, अति-आधुनिक तथा तकनीकी संचालित एक्सचेंज है इसकी स्थापना सन् 1992 में की गई थी तथा अप्रैल 1993 में इसे शेयर बाजार के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी।

राष्ट्राय शेयर बाजार की स्थापना अग्रणी वित्तीय संस्थाओं बैंकों बीमा कम्पनियों तथा अन्य वित्तीय मध्यस्यो द्वारा का गई थी। यह उन व्यावसायिक संगठनों द्वारा प्रबन्धित किया जाता है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शेयर बाजार में व्यापार नहीं करते हैं। इस शेयर बाजार के व्यापार अधिकार उन व्यापारिक सदस्यों के नाम है जो अपनी सेवाओं को निवेशकों को उपलब्ध कराते हैं।

प्रश्न 74. 'प्राथमिक बाजार' से आपका क्या आशय है?

उत्तर- प्राथमिक बाजार से आशय उस बाजार से है जिसमें दीर्घकालीन पूँजी एकत्रित करने प्रतिभूतियों का पहली बार विक्रय किया जाता है।

प्रश्न 75. "द्वितीयक बाजार' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- द्वितीयक बाजार से आशय उस बाजार से है जहाँ उन प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय किया जाता है. जो पहले से ही बाजार में विद्यमान हैं। इसके अन्तर्गत एक पुराना विनियोजक अपनी प्रतिभूतियाँ दूसरे नए विनियोजक को विक्रय करता है। इस प्रकार इस बाजार में क्रय एवं विक्रय दोनों कार्य लगातार होते रहते हैं। यह बाजार दीर्घकालीन प्रतिभूतियों में तरलता उत्पन्न करता है। इस बाजार में लेन-देन प्रायः स्कन्ध बाजार की मदद से ही होते हैं।

प्रश्न 76. मुद्रा बाजार की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- मुद्रा बाजार की विशेषताएँ---मुद्रा बाजार की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं---

1. तरलता--- इस बाजार में बहुत अधिक तरलता पायी जाती है।

2. कम व्यवहार लागत---- इस बाजार में किए जाने वाले व्यवहारों हेतु दलालों की आवश्यकता नहीं होती जिससे किए जाने वाले क्रय-विक्रय पर व्यवहार लागत अत्यधिक कम आती है।

3. अल्पकालीन वित्तीय सम्पत्तियाँ---- इस बाजार में व्यवहार की जाने वाली सम्पत्तियों (वित्तीय प्रलेखों) की अवधि अल्पकालीन अर्थात् अधिक-से-अधिक 1 वर्ष होती है।

4. अनेक उप-बाजारों का समूह--- यह बाजार अनेक उप-बाजारों के समूह में बँटा है।

5. सन्तुलन कार्य---- यह व्यापार अल्पकालीन वित्तीय माँग एवं उसकी पूर्ति में सन्तुलन स्थापित करने का कार्य करता है।

6. व्यवहारों की तेज गति---- मुद्रा बाजार में व्यवहार प्रायः फोन पर ही सम्पन्न हो जाते हैं, इस कारण उनकी गति तेज होती है।

प्रश्न 77. राष्ट्रीय शेयर बाजार एन०एस०ई० के उद्देश्यों को बताइए। [NCERT]

उत्तर- राष्ट्रीय शेयर बाजार (एन० एस०ई०) के उद्देश्य-राष्ट्रीय शेयर बाजार (एन०एस०ई०) की स्थापना निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु की गई थी---

1. सभी प्रकार की प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय हेतु एक राष्ट्रव्यापी व्यापार सुविधा प्रदान करना।

2. एक अत्याधुनिक संचार नेटवर्क के द्वारा सम्पूर्ण देश के अन्दर निवेशकों की समान पहुँच को सुनिश्चित करना।

3. इलेक्ट्रॉनिक व्यापार प्रणाली का उपयोग करके एक निष्पक्ष, सक्षम तथा पारदर्शी प्रतिभति बाजार की स्थापना करना।

4. सभी को लघु भुगतान चक्र एवं बुक (पुस्तक) प्रविष्टि निपटान के योग्य बनाना।

5. अन्तर्राष्ट्रीय ऊँचाइयों एवं मानकों को पूरा करना।

प्रश्न 78. वित्तीय बाजार का वर्गीकरण दीजिए।

उत्तर- वित्तीय बाजार का वर्गीकरण वित्तीय बाजारों का वर्गीकरण, उनके द्वारा व्यापार किए जाने वाले वित्तीय प्रपत्रों की परिपक्वता के आधार पर किया जाता है। एक वर्ष से कम परिपक्वता वाले वित्तीय प्रपत्रों का व्यापार तो द्रव्य या मुद्रा बाजार के अन्तर्गत किया जाता है जबकि एक वर्ष से अधिक परिपक्वता वाले वित्तीय प्रपत्रों का व्यापार पूँजी बाजार के अन्तर्गत किया जाता है।

प्रश्न 79. अधिकार निर्गम का अर्थ बताइए।

उत्तर-- अधिकार निर्गम--- यह एक विशेष अधिकार है जोकि कंपनी शर्तों एवं नियमों के अनुसार विद्यामान शेयरधारकों को नए निर्गमों को पूर्व क्रय करने का अवसर प्रदान करना है। इसके द्वारा शेयरधारको को पहले से ही कमाए (खरीदे) गए शेयरों के अनुपात में नये शेयरों को खरीदने का अधिकार दिया जाता है।

प्रश्न 80. पूँजी बाजार की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- पूँजी बाजार की विशेषताएँ-पूँजी बाजार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. दीर्घकालीन प्रतिभूतियों में व्यवहार---- इस बाजार में दीर्घकालीन सरकारी और गैर-सरकारी प्रतिभूतियों में व्यवहार करते हैं। इनकी अवधि प्राय: 1 वर्ष से अधिक की होती है।

2. सन्तुलन स्थापित करना--- इसके द्वारा दीर्घकालीन वित्त की माँग और पूर्ति में सन्तुलन स्थापित किया जाता है।

3. व्यावसायिक स्वामित्व में भिन्नता उत्पन्न करना---- पूंजी बाजार के माध्यम से कम्पनियों के अंशो का स्वामित्व कुछ ही लोगों के हाथों में केन्द्रित नहीं होता अपितु अनेक लोगों के पास हस्तान्तरित होता है ।

4. पूँजी निर्माण में सहायक--- इस बाजार से लोगों को निवेश के अवसर प्रदान होते हैं। इससे पूँजी निर्माण को भी प्रोत्साहन मिलता है।

5. तरलता---- यह बाजार प्रतिभूतियों में तरलता लाने में सहायता करता है।

प्रश्न 81. पूँजी बाजार का अर्थ समझाइए।

उत्तर- पूँजी बाजार--- एक आदर्श पूँजी बाजार वह होता है जहाँ पर उचित मूल्य पर वित्त प्राप्त होता है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया एक कुशल एवं कार्यशील पूंजी बाजार के द्वारा ही पूरी हो सकती है।

वस्तुत: एक वित्तीय प्रणाली के विकास को आर्थिक विकास के लिए आवश्यक स्थिति माना जाता है। अत: वित्तीय संस्थाओं का पर्याप्त विकसित होना बहुत आवश्यक है तथा साथ ही बाजार की कार्यात्मकता भी मुक्त, निष्पक्ष, प्रतिस्पर्धी एवं पारदर्शी होनी चाहिए। इसके साथ-साथ पूँजी बाजार द्वारा उन सूचनाओं को भी सम्मान दिया जाना चाहिए जोकि वह अंतरित करता हो, लेन-देन का मूल्य न्यूनतम होना चाहिए तथा पूँजी का विनियोग सर्वाधिक उत्पादकतापूर्ण ढंग से होना चाहिए। पूँजी बाजार को निम्नलिखित दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है 1. प्राथमिक बाजार, 2. द्वितीयक बाजार।

प्रश्न 82. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अन्तर्गत उपभोक्ता' शब्द को समझाइए।

उत्तर- साधारण शब्दों में उपभोक्ता' शब्द से अभिप्राय उस व्यक्ति से होता है जो वस्तुओं का उपयोग अथवा उपभोग करता है या फिर सेवाओं का लाभ उठाता है। परन्तु उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अनमार 'उपभोक्ता' को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है---

1. वह व्यक्ति जो प्रतिफल के बदले में वस्तुओं तथा सेवाओं का क्रय करता है.

2. वह व्यक्ति जो क्रेता की अनुमति से खरीदी गई वस्तुओं का उपभोग करता है अथवा मेवाओं का लाभ उठाता है, एवं

3. कोई भी वह व्यक्ति जो वस्तुओं और सेवाओं को अपने जीविकोपार्जन हेतु किराये पर लेता है।

प्रश्न 83. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 क्या है?

उत्तर- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 उपभोक्ताओं के हितों को उनको शिकायतों के शीघ्रातिशीघ्र और बिना किसी व्यय के निवारण कर संरक्षण एवं प्रवर्तन की व्यवस्था करता है। इस अधिनियम का क्षेत्र अधिक व्यापक होता है। यह अधिनियम उन सभी व्यावसायिक इकाइयों पर लाग होता है जो छोटी एवं बड़ी. सार्वजनिक या निजी क्षेत्र में अथवा सहकारी क्षेत्र में, उत्पादक होती है अथवा व्यापारी तथा वस्तुओं की आपर्ति करती हैं अथवा सेवाएं प्रदान करती है। यह उपभोक्ताओं में शक्ति प्रदान करने एवं उनके हितों की रक्षा करने हेतु कुछ अधिकार प्रदान करता है।

प्रश्न 84. एक उपभोक्ता के कोई दो उत्तरदायित्वों को लिखिए।

उत्तर- 1. उपभोक्ता को हमेशा अपने अधिकारों का प्रयोग करना चाहिए।

2. उचित पीड़ा के समाधान हेतु शिकायत करनी चाहिए।

प्रश्न- 85. दो उपभोक्ता संगठनों के नाम बताहए।

उत्तर- 1.Citizen Action Group. Mumbai

2. Common cause, New Delhi.

प्रश्न 86. उपभोक्ता संरक्षण से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर- उपभोक्ता संरक्षण से आशय उत्पादको तथा विक्रेताओं के अनचित व्यवहार से उपभोक्ताआ का सुरक्षा प्रदान करने से होता है।

प्रश्न 87. राज्य आयोग में दायर किए जा सकने वाले मामलों का अधिकार क्षेत्र क्या है? [NCERT]

उत्तर- किसी वस्तु या सेवा का मूल्य क्षतिपूर्ति दावे की राशि सहित र 20 से अधिक एवं र 1 करोड़ से कम होने पर उसका दावा राज्य आयोग में किया जाता है।

प्रश्न 88. उपभोक्ता अदालत में शिकायत कौन दर्ज कर सकता है? [NCERT]

उत्तर- उपभोक्ता अदालत में निम्नलिखित के द्वारा शिकायत दर्ज की जा सकती है---

1. किसी भी उपभोक्ता के द्वारा,

2. किसी भी पंजीकृत उपभोक्ता के द्वारा,

3. किसी भी राज्य सरकार या केन्द्र सरकार के द्वारा,

4. विभिन्न सामान हितार्थ उपभोक्ताओं की ओर से किसी एक अथवा अनेक उपभोक्ताओं के द्वारा, एवं

5. किसी मृतक उपभोक्ता के कानुनी उत्तराधिकारी अथवा उसके किसी प्रतिनिधि के द्वारा।

प्रश्न 89. उपभोक्ता जागरूकता का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उपभोक्ता जागरूकता से आशय उपभोक्ता को अपने अधिकार और दायित्वों के प्रति सजग करना होता है जिससे वह विक्रेताओं के द्वारा किए जाने वाले शोषण से अपने आप को बचा सके।

प्रश्न 90. उपभोक्ता संरक्षण की किन्हीं चार विशेषताओं को समझाइए।

उत्तर- उपभोक्ता संरक्षण की चार प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है---

1. यह प्रत्येक प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं पर लागू होता है।

2 वह निजी, सार्वजनिक तथा सहकारी सभी क्षेत्रो में लागू होता है।

3. यह उपभोक्ताओं को सुरक्षा, सूचना, चयन, प्रतिनिधित्व, उपचार और शिक्षा आदि से सम्बन्धित अधिकारों को प्रदान करता है।

4. इसके अन्तर्गत उन सभी क्रियाओं पर रोक लगाने का प्रावधान होता है जो उपभोक्ताओं के लिए जोखिम को उत्पन्न करती हो।

प्रश्न 91. भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम, 1986 को समझाइए।

उत्तर- भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम, 1986-इस अधिनियम के अंतर्गत भारतीय मानक ब्यूरो की स्थापना की गई है। ब्यूरो की दो मुख्य क्रियाएँ है-वस्तुओ के लिए गुणवत्ता मानक निर्धारित करना तथा बी०आई०एस० प्रमाणीकरण योजना के माध्यम से उनका प्रमाणीकरण करना। किसी निर्माता को अपने उत्पादों पर आई०एस०आई० (ISI) चिह्न प्रयोग करने का अधिकार तभी है जब उसके उत्पादो की गणवत्ता मानकों के अनुरूप हो। इसके साथ ही ब्यूरो ने एक शिकायत प्रकोष्ठ भी बनाया है जहाँ उपभोक्ता ऐसी वस्तुओं की गुणवत्ता की शिकायत कर सकते हैं जिस पर यह चिह्न अंकित है।

प्रश्न 92. कृषि उत्पादों के लिए कौन-सा गुणवत्ता प्रमाणीकरण चिह उपयोग किया जाता है। INCERT

उत्तर- कृषि उत्पादों के लिए एगमार्क गुणवत्ता प्रमाणीकरण चिह्न का उपयोग किया जाता है। यह चिह सुनिश्चित करता है कि ये कृषि उत्पाद भारत सरकार की एजेसी, विपणन और निरीक्षण निदेशालय द्वारा अनुमोदित मानकों के अनुरूप हैं। यह चिद भारत में कषि उपज (ग्रेडिंग और मार्किंग) अधिनियम, 1917 (1986 में संशोधित) द्वारा कानुनी रूप से लागू किया गया है।

प्रश्न 93. उत्पाद मिश्र के घटक का नाम दें, जो ग्राहकों को सूचना का अधिकार का प्रयोग करने में मदद करता है। [NCERT]

उत्तर- सूचना का अधिकार-उपभोक्ता जिस वस्तु का क्रय करता है उसके सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त करने का अधिकार रखता है। इसके सम्बन्ध में वह वस्त की मात्रा, घटक, उपयोग, निर्माण तिथि म आदि से सम्बन्धित जानकारी ले सकता है। अतः इसी कारण निर्माताओं को अपने उत्पाद के पैकेज एवं लेबल पर इससे सम्बन्धित जानकारी देनी होती है।